पुराण का लक्षण → पुराणों की परिभाषा बताते हुए सभी ने यह स्वीकार किया है कि ज्ञात-सत्यार्थभूत-पञ्चलक्षणात्मक आख्यान-उपाख्यान, प्रबन्ध कल्पना से युक्त ग्रन्थों का नाम पुराण है। इस सम्बन्ध में सभी पुराणों में प्रायः स्वल्पशब्दान्तर से निम्न श्लोक प्राप्त होता है—

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥"

अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित पुराणों के ये पाँच लक्षण है।

इसकी बड़ी श्लाघनीय ~~व्याख्या~~ विवेचना आचार्य बलदेव उपाध्याय के द्वारा प्रस्तुत की गई है। इसे ही आगे प्रस्तुत किया जा रहा है—

सर्ग - जगत की तथा उसके नाना पदार्थों की उत्पत्ति अथवा सृष्टि सर्ग कहलाती है। श्रीमद्भागवत महापुराण में इसे इस प्रकार व्याख्यायित किया गया है—

"अव्याकृतगुणक्षोभात् महतस्त्रिवृतोऽहमः।
भूतमात्रेन्द्रियार्थानां सम्भवः सर्ग उच्यते॥"

आशय है कि जब मूल प्रकृति में लीन गुण क्षुब्ध होते हैं, तब महत तत्त्व की उत्पत्ति होती है। महत तत्त्व से तीन प्रकार तामस, राजस तथा सात्विक के अहंकार बनते हैं। त्रिविध अहंकार से ही पञ्चतन्मात्रा, इन्द्रिय तथा पञ्चभूतों की उत्पत्ति होती है। इसी उत्पत्ति क्रम का नाम सर्ग है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

प्रतिसर्ग → सर्ग से विपरीत वस्तु अर्थात् प्रलय। विष्णु पुराण में प्रतिसर्ग के स्थान पर प्रतिसंचर शब्द का प्रयोग मिलता है। श्रीमद्भागवत में इस शब्द के स्थान पर संस्था शब्द प्रयुक्त हुआ है –

"नैमित्तिको प्राकृतिको नित्य आत्यन्तिको लयः।
संस्थेति कविभिः प्रोक्ता चतुर्धाऽस्य स्वभावतः॥"

इस ब्रह्माण्ड का स्वभाव से ही प्रलय हो जाता है और यह प्रलय चार प्रकार का है – नैमित्तिक, प्राकृतिक, नित्य तथा आत्यन्तिक। यही संस्था शब्द से भी अभिहित किया गया है।

आचार्य कपिलदेव द्विवेदी ने प्रतिसर्ग का अर्थ प्रलय एवं सृष्टि का पुनः प्रादुर्भाव बतलाया है।

वंश → श्रीमद्भागवत महापुराण में कहा गया है –

"राज्ञां ब्रह्मप्रसूतानां वंशस्त्रैकालिकोऽन्वयः।"

अर्थात् ब्रह्माजी के द्वारा जितने राजाओं की सृष्टि हुई, उनकी भूत, भविष्य तथा वर्तमानकालीन सन्तान परम्परा को वंश नाम से पुकारते हैं। भागवत के द्वारा व्याख्यात इस शब्द के भीतर राजाओं की ही सन्तान परम्परा का उल्लेख प्राधान्यधिया है, परन्तु 'वंश' को राजवंश तक सीमित करना उपयुक्त नहीं है। इस शब्द के भीतर ऋषियों एवं देवताओं के वंश का ग्रहण अन्य पुराणों में किया गया है।

मन्वन्तर → सृष्टिक्रम की कालगणना मन्वन्तर में मानी जाती है। इस प्रकार यह शब्द सृष्टि के विभिन्न काल-मान का द्योतक शब्द है। मन्वन्तर 14 होते हैं और प्रत्येक मन्वन्तर का अधिपति एक विशिष्ट मनु हुआ करता है। इसके सहयोगी पदार्थ और भी हुआ करते हैं ~

~~मन्वन्त~~ मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः।
ऋषयोऽशावताराश्च हरेः षड्विधमुच्यते॥

अर्थात् मनु, देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि और भगवान के अंशावतार – इन छः विशिष्टताओं से युक्त समय को मन्वन्तर कहते हैं।

Scanned with CamScanner

वंशानुचरित - महर्षियों तथा राजाओं के चरित्रों के वर्णन को वंशानुचरित कहते हैं।

कौटिल्य अर्थशास्त्र की व्याख्या में जयमंगला ने किसी प्राचीन ग्रन्थ से यह श्लोक उद्धृत किया है -

"सृष्टि-प्रवृत्ति-संहार-धर्ममोक्षप्रयोजनम्।
ब्रह्मभिर्विविधैः प्रोक्तं पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

सभी पुराणों ने 'सर्गश्च .... लक्षणम्' - इस लक्षण को ही पुराण तथा उपपुराणों का मुख्य वर्ण्य विषय बताया है। किन्तु श्रीमद्भागवत तथा ब्रह्मवैवर्तपुराण में पुराणों के दस विषयों का परिगणन करते हुए पाँच लक्षणों से युक्त पुराणों को उपपुराण तथा दस लक्षणों वाले पुराणों को महापुराण कहा गया है। श्रीमद्भागवत में पुराणों के दस लक्षण इस प्रकार बताए गए हैं -

"अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः।
मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः॥
दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणम्।
वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेनार्थेन चाञ्जसा॥"

अर्थात इस महापुराण में सर्ग, विसर्ग, स्थान, पोषण, ऊति, मन्वन्तर, ईशानुकथा, निरोध, मुक्ति और आश्रय - इन दस विषयों का वर्णन है। इसमें जो दसवाँ आश्रय तत्त्व है, उसी का ठीक-ठीक निश्चय करने के लिए कहीं श्रुति से, कहीं तात्पर्य से और कहीं दोनों के अनुकूल अनुभव से महात्माओं ने अन्य नौ विषयों का बड़ी सुगम रीति से वर्णन किया है।

ईश्वर की प्रेरणा से गुणों में क्षोभ होकर रूपान्तर होने से जो आकाशादि पञ्चभूत शब्दादि तन्मात्राएँ, इन्द्रियाँ, अहंकार और महत्तत्त्व की उत्पत्ति होती है उसे सर्ग कहते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह से सृष्टि की सामर्थ्य प्राप्त करके महत्तत्त्व आदि पूर्वकर्मों के अनुसार अच्छी और बुरी वासनाओं

Scanned with CamScanner

की प्रधानता से एक बीज से दूसरे बीज के समान जो यह चराचर शरीरात्मक जीव की उपाधि की सृष्टि करते हैं, इसे विसर्ग कहते हैं –

"पुरुषानुगृहीतानामेतेषां वासनामयः।
विसर्गोऽयं समाहारो बीजाद् बीजं चराचरम्॥"

प्रतिपल नाश की ओर बढ़नेवाली सृष्टि को एक मर्यादा में स्थिर रखने से भगवान विष्णु की जो श्रेष्ठता सिद्ध होती है उसका नाम है 'स्थान'। अपने द्वारा सुरक्षित सृष्टि में भक्तों के ऊपर उनकी जो कृपा होती है, उसका नाम है 'पोषण'। पोषण का अर्थ है भगवान का अनुग्रह। पोषण जीव को ~~भग~~ भगवदुन्मुख बनाने में एक प्रेरक तत्त्व है। श्री वल्लभाचार्य ने इस 'पोषण' को अपने वैष्णव सम्प्रदाय का अनिवार्य तत्त्व मानकर अपने मार्ग की ही संज्ञा इसी के आधार पर रखी है। यह है- पुष्टिमार्ग। मन्वन्तरों के अधिपति जो भगवद्भक्ति और प्रजापालनरूप शुद्ध धर्म का अनुष्ठान करते हैं, उसे मन्वन्तर कहते हैं। मन्वन्तर काल का विशिष्ट रूप माना जाता है जिसमें सज्जनों के धर्म का प्रत्यक्षीकरण साध्यकों को होता है। जीवों की वे वासनाएँ जो कर्म के द्वारा उन्हें बन्धन में डाल देती हैं, ऊति नाम से कही जाती हैं। भगवान के विभिन्न अवतारों के और उनके प्रेमी भक्तों की विविध आख्यानों से युक्त गाथाएं ईशकथा हैं –

"अवतारानुचरितं हरेश्चास्यानुवर्तिनाम्।
सतामीशकथा प्रोक्ता नानाख्यानोपबृंहिता॥"

जब भगवान योगनिद्रा स्वीकार करके शयन करते हैं तब इस जीव का अपनी उपाधियों के साथ उसमें लीन हो जाना निरोध कहलाता है। श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि जब आत्मा अपनी शक्तियों के साथ सो जाता है, तब सारे जगत का निरोध अर्थात प्रलय हो जाता है –

"निरोधोऽस्यानुशयनमात्मनः सह शक्तिभिः।"

पञ्चलक्षण में 'प्रतिसर्ग' का प्रतिनिधि लक्षण है। अज्ञानकल्पित कर्तृत्व, भोक्तृत्व आदि अनात्मभाव का परित्याग करके अपने वास्तविक स्वरूप में परमात्मा में स्थित होना ही मुक्ति है – "मुक्तिर्हित्वाऽन्यथा रूपं स्वरूपेण व्यवस्थितिः"

Scanned with CamScanner

इस चराचर जगत् की उत्पत्ति और प्रलय जिस तत्त्व से प्रकाशित होते हैं, वह परम ब्रह्म ही 'आश्रय' है। उसका आश्रय वह स्वयं ही है, दूसरा कोई नहीं। श्रीमद्भागवत में कहा गया है—

"आभासश्च निरोधश्च यतश्चाध्यवसायते।
स आश्रयः परं ब्रह्म परमात्मेति शब्द्यते॥"

इस दस लक्षणों को कुछ शब्दान्तर के साथ श्रीमद्भागवत के ही द्वादश स्कन्ध के सातवें अध्याय के नवें श्लोक में इस प्रकार बताया गया है—

"सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्ती रक्षान्तराणि च।
वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः॥"

अर्थात् सर्ग, विसर्ग, वृत्ति, रक्षा, मन्वन्तर, वंश, वंशानुचरित, संस्था, हेतु तथा अपाश्रय ये दस-लक्षण पुराणों के हैं। ✓

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner